(1)

प्र. कांची के पल्लवों की सांस्कृतिक देनों की विवेचना करें।

→ पल्लवों की शासन पद्धति : सुदूर दक्षिण में पल्लवों का राज्य था जो लगभग सात शताब्दियों तक कायम रहा। इस लम्बी अवधि में उन्होंने शासन, राजनीति कला, धर्म और साहित्य तथा संस्कृति के क्षेत्र में प्रशंसनीय उन्नति की। उनकी शासन पद्धति के निम्नलिखित तत्व अत्यधिक प्रमुख थे :-

(i) राजा → पल्लव शासन का केन्द्र राजा होता था। राज्य का प्रधान था। राजा धर्मराज भी कहलाता था। वह सर्वाधिक सम्पन्न होता था।

(ii) राजा के सहायक → राजा अपने शासन कार्यों में मन्त्रियों से सहायता लेता था। उसके मन्त्रियों को रहस्याधिकृता भी कहा जाता है था। उसकी सहायता के लिए प्रान्तीय गवर्नर तथा अन्य अमात्यगण थे। इन मन्त्रियों को स्नानागार, अरण्यों और उद्यानों ~~स्नाना~~ स्नानागारों से संबंधित कार्यों को सौंपा जाता था। राजा का व्यक्तिगत सचिव (private secretary) भी होता था। जो राजा की आज्ञाओं को कागज पर लिखता था।

(iii) कर्मचारीगण → मौर्य और गुप्त शासन प्रणाली की भाँति पल्लवों के शासन में भी नागरिक और सैन्य अधिकारियों का एक वर्ग था। अतः पल्लव शासन पद्धति में शासन कार्य के लिए निम्नलिखित कर्मचारी मुख्य थे राजा, राजकुमारों, ~~द~~ राष्ट्रिकों (जिलाधीशों), प्रधान सस्त्रों (चुंगी अफसर), स्थानीय अधिकारियों, विविध ग्रामों के स्वामी, मन्त्रियों, रक्षकों, भूमिकों (वन के अफसरों), स्थानिय अधिकारियों, विविध ग्रामों के स्वामी, मन्त्रियों, रक्षकों, भूमिकों (वन के अफसरों, दूतिकों और योद्धाओं) इत्यादि। इनके अतिरिक्त स्नान की सुविधा देने वाले कर्मचारी को तीर्थक कहा जाता था। वैयक सेना का अधिकारी होता था।

सम्राट राष्ट्रों अथवा मण्डलों (प्रान्तों) में बँटा हुआ था, जिसके शासक राजकुल से बहाल किए जाते थे। छोटे-छोटे प्रदेशों, कोट्टमों और नाडुओं के भी शासक होते थे। राष्ट्र के प्रधान अधिकारी को विषयक कहा जाता था। कोट्टम का शासक देशाधिक होता था। ग्राम के शासन को पवित्त कहा जाता था।

④ ग्राम शासन :- ग्राम शासन की सबसे छोटी इकाई थी। ग्राम की एक सभा होती थी, जो गाँवों का प्रबंध ~~ग्राम सभा~~ करती थी। पल्लवों के ग्राम-शासन के अन्तर्गत सभा, उद्यान, मन्दिर, तालाब आदि का प्रबंध ग्राम सभा की उप समितियाँ करती थी। इन कार्यों के अतिरिक्त ग्राम सभा न्याय एवं सार्वजनिक दान का भी प्रबंध करती थी। पल्लव शासन काल में भूमि और सिंचाई की व्यवस्था बड़ी अच्छी थी। गाँवों की सीमाएँ निर्धारित थी। उपजाऊ जमीन और परती जमीन की माप का विवरण अलग-अलग रखा जाता था। ब्राह्मणों को भूमि दान में दी जाती थी। कर की व्यवस्था सुन्दर थी। गाँव की जनता से ~~18~~ 18 तरह की कर लिए जाते थे, जो शासन प्रबंध और प्रजा की भलाई में खर्च किए जाते थे। श्री गोपाल का विचार है कि पल्लव शासन व्यवस्था कुछ अंशों में मौर्य शासन प्रबंध से मिलती जुलती है। इस संबंध में कृष्णास्वामी आयंगर का भी यही मत है।

• साहित्य की उन्नति :- साहित्य के दृष्टिकोण से पल्लव शासन महत्वपूर्ण था, क्योंकि इस युग में साहित्य के क्षेत्र में काफी उन्नति हुई थी। संस्कृत को राजभाषा का पद प्राप्त था। उसके अधिकतर अभिलेख संस्कृत में ही लिखे गए थे। पल्लव राजाओं के समय अलवार तथा अदियार आन्दोलन का सूत्रपात हुआ था। उनकी राजधानी प्राचीन काल से ही विद्या संस्कृति का केंद्र थी। बौद्ध-दार्शनिक दिग्नाग बौद्धिक तथा आध्यात्मिक चिन्तन के लिए काँची में आया था। मयूर वर्मन

न भी यही आकर अपना बौद्धिक अध्ययन तथा मनन समाप्त किया था। पल्लव राजा विद्वानों का खूब आदर करते तथा साहित्यकारों तथा कवियों की वे तहेदिल से मदद करते थे। सिंह विष्णु ने अपने राजसभा में महाकवि भारवी को बुलाया था। नरसिंह वर्मन द्वितीय के समय अलंकार शास्त्री दंडिन उसके दरबार मे रहा करते थे। महेन्द्र वर्मन प्रथम ने स्वयं "मतविलास" "प्रहसन" की रचना की थी। भास और शूद्रक के नाटक पल्लव दरबार में संक्षिप्त किये थे। अत: उस युग में साहित्य की काफी प्रगति हुई थी।

धार्मिक दशा :- पल्लव वंस के प्राय: सभी राजा शैव थे। लेकिन बौद्ध धर्म का भी खूब प्रचार था। चीनी यात्री ह्वेनसांग जो नरसिंह वर्मन प्रथम के शासन काल में काँची आया था। उसने लिखा है कि काँची में संघारामों की संख्या लगभग एक हजार थी, जिसमें 10,000 भिक्षु निवास करते थे। यह सभी भिक्षुक महायान सम्प्रदाय के स्थायी शाखा के अनुयायी थे। उसने काँची के 80 देव मन्दिरों का भी उल्लेख किया था। दिगम्बर जैनियों की संख्या खूब थी। अत: उपर्युक्त बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि पल्लव शासकों ने सहिष्णुता का पालन किया था। लेकिन शैव धर्म के प्रचार से जैन धर्म का पतन हो गया था।

आर्थिक दशा :- ह्वेनसांग ने लिखा है कि वहाँ की भूमि खूब उपजाऊ थी। वहाँ के लोग खूब मेहनती थे। खेतों में अधिक अनाज उपजाता था। वहाँ के लोग अनेक तरह के फल-फूल की उगाते थे। उष्ण जलवायु के वजह से वहाँ के लोग साहसी थे। सत्यप्रियता तथा ईमानदारी से उन्हें प्रेम था।

कला की उन्नति : पल्लव युग में वास्तुकला का खूब उन्नति हुई थी। तामिल देश के पाषाण कला का प्रयोग पल्लव काल से ही शुरू हुआ था। सर्वप्रथम मियनापल्ली के करी मन्दिर, महाबलीपुरम के रथ मंदिर आदि उसी समय की उपलब्ध कलाएँ हैं। पल्लव काल की वास्तुकला की निम्नलिखित चार शैलियाँ मिलती हैं :- (i) महामल्ल शैली
(ii) महेन्द्र वर्मन शैली
(iii) राजसिंह शैली
(iv) अपराजिता शैली

पहले कला में काष्ठ का प्रयोग होता था। बाद में अन्य वस्तुओं का भी प्रयोग होने लगा। कैलाशनाथ मंदिर पत्थर और चूने के द्वारा बनवाया गया था। महेन्द्रवर्मन ने ब्रह्मा, विष्णु, और महेश का एक मंदिर बिना ईंट, चूने, लोहे और लकड़ी के बनवाया था। कैलाशनाथ मंदिर की दीवारों की तक्षण चित्रों से अलंकृत किया गया था।

निष्कर्षत :- यहाँ के सभी राजा वस्तु-कला, संगीत कला, नृत्य कला, राज्य कला, साहित्य तथा धर्म में विशेष प्रेम रखते थे। फलस्वरूप यहाँ की संस्कृति उन्नत थी।